भारत स्वातन्त्र्य स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थमाला-22

संस्कृत कोश-शास्त्र के विविध आयाम

सत्य पाल नारंग

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

भूमिका

स्नातक कक्षाओं में अध्ययन काल में काव्य पढ़ते हुए **अष्टाध्यायी जगन्माता अमरकोषो जगत्पिता** की व्याख्याओं और उद्धरणों का मुझ पर इतना प्रभाव पड़ा कि स्नातकोत्तर कक्षाओं में एक विशेष विषय के रूप में ग्रहण किया। तत्पश्चात् संस्कृत शास्त्रकाव्यों पर अनुसन्धान किया और कुछ ग्रन्थों को प्रकाशित भी किया, जिनके नाम हैं — Bhaṭṭi-kāvya : A Study, Delhi, १९६९; Hemacandra's Dvyāśrayakāvya : A literary and Cultural Study, Delhi, 1972.

अपने अध्ययन काल में व्याकरण, प्राकृत व्याकरण और कोशशास्त्र के सिद्धान्तों से प्रभावित होकर विशेषरूप से हेमचन्द्र से प्रभावित होकर द्व्याश्रय काव्य को भूमिका सहित इसे सम्पादित किया। अनेक छात्रों ने चान्द्र व्याकरण, हेमचन्द्र व्याकरण, दैव, ऋग्वेद और उसकी धातुओं के अर्थपरक अध्ययन तथा कोश पर कार्य करके एम.फिल् एवं पीएच्.डी. की उपाधि ग्रहण की।

यह कोई पुराना संस्कार था कि १९७६ में कोशों के विकास के लिये एक योजना आरम्भ की जिसके अन्तर्गत अनेक छात्रों ने एम. फिल् के लिये कोशों के तकनीकी तथा सांस्कृतिक विकास आदि विषयों पर कार्य किया, यथा- सुषमा फक्का (खन्ना), अंजू सेठ (कपूर), सुधा सिंह, मिथलेश शर्मा, सुधा शर्मा, निर्मल कुमारी तथा मनीषा अग्रवाल (पीएच्.डी. में संलग्न)। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य छात्र भी इस विषय पर पी.एच.डी. कर चुके हैं। (द्रष्टव्य-ग्रन्थ-सूची)

मिथलेश शर्मा ने एकाक्षरी पर और सुधा शर्मा ने महेन्द्रसूरि के अने-कार्थकैरवकौमुदी पर आलोचनात्मक अध्ययन के रूप में पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की जिनके निष्कर्ष पूर्वसूरियों के बिर्वे, पाटकर तथा फोगल के ग्रन्थों के निष्कर्षों से भिन्न सिद्ध हुए यथा - सुधा शर्मा ने कुछ पत्र भी प्रकाशित किये जबकि अन्य सामग्री यथावत् पड़ी रही। कुछ सूचनाएँ और निष्कर्ष भी इस ग्रन्थ में सम्मिलित किये गये जिसकी सामग्री अभी भी अप्रकाशित है।

इस विषय से सम्बद्ध एक योजना १९९७-९८ में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत की गई। इसके अतिरिक्त **राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान** ने

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
आभार	v-vi
Abbreviations	vii-xiii
भूमिका	xv-xvii
प्रथम अध्याय	
(१) प्रस्तावना	
(२) पृष्ठ भमि	
(३) नींव के आकार	
द्वितीय अध्याय	
समार्थी पर्यायवाची कोश	३०-१४०
तृतीय अध्याय	
अनेकार्थकोश	१४१-१६७
चतुर्थ अध्याय	
एकाक्षरकोश	१६८-१८२
पञ्चम अध्याय	
अन्य कोश विधाएं	१८३-२२६
षष्ठ अध्याय	
नाम संकलन परम्परा	२२७-२३७
सप्तम अध्याय	२३८-२७८
(१) अज्ञात कोशकार (उद्धरणों से)	
(२) महेन्द्रसूरि	
(३) पुरुषोत्तम	
Bibliography	२७९-३३२

द्विसन्धान कवि के नाम से प्रतिष्ठित धनञ्जय कवि का समय आठवीं शती का उत्तरार्द्ध तथा नवीं शती का पूर्वार्द्ध माना जाता है। इन्होंने नाममाला नामक संस्कृत कोश की रचना की है।इस कोश के चार भाग हैं नाममाला अनेकार्थ नाममाला, अनेकार्थ निघण्टु तथा एकाक्षरी कोश। नाममाला तथा अनेकार्थ नाममाला भाग निश्चयपूर्वक धनञ्जय द्वारा ही लिखित है। अनेकार्थ निघण्टु में भी पुष्पिका वाक्य में धनञ्जय का स्पष्ट उल्लेख है। एकाक्षरी कोश में यद्यपि धनञ्जय का नामोल्लेख नहीं है परन्तु प्रथम श्लोक से यह उन्हीं की कृति जान पड़ती है। नाममाला कोश २०० श्लोकों का संग्रह है जिनमें संस्कृत भाषा के व्यवहारोपयोगी तथा आवश्यक शब्दों का संकलन किया गया है। इस कोश में शब्दों से नये शब्द बनाने की विधि का वर्णन किया है। कोशकार कहते हैं कि वे केवल अल्पज्ञों के लिये कुछ जानकारी देना चाहते हैं न कि विद्वानों के लिये[१]। अतः शब्दों की सीमितता की ओर ध्यान न दें क्योंकि वाचस्पति यदि स्वयं विषय का प्रतिपादन करें तो भी शब्दों के पारायण की थाह नहीं पा सकते।[२]

उनकी कोश रचना का विशेष प्रयोजन है। नाममाला भाग में उनका प्रमुख ध्येय अपने पर्यायवाची बनाने की पद्धति का विशद वर्णन करना है साथ साथ वे मोटे तौर पर उन विषयों को स्पर्श करते जाते हैं। जिनकी चर्चा शिष्ट समाज में मोटे तौर पर होती है। कोश के आरम्भ में वे वाणी तथा मन से अगोचर परम ज्योति को प्रणाम करते हैं।

सर्वप्रथम वे युग्म के दस पर्यायवाची बताते हैं। तथा जिन मुनि के चरणयुगलों से रक्षा की याचना करते हुए कोश का आरम्भ करते हैं।[३] उसी परम्परा में क्रमशः ऋषि शिष्य और सिद्धान्त के पर्यायवाची बताते हैं तथा प्रणाम करते चलते हैं।

---

1 तथापि किञ्चत् कस्मैचित् प्रतिबोधाय सूचितम्।
बोधयेत्कियदुक्तज्ञो मार्गज्ञः सह याति किम्॥ २००॥

2 वक्ता वाचस्पतिर्यत्र श्रोता शक्रस्तथापि तौ।
शब्दपारायणस्यान्तं न गतौ तत्र के वयम्॥१९९॥

3 द्वयं द्वितयमुभयं यमलं युगलं युगम्।
युग्मं द्वन्द्वं यम द्वैतं पादयोः पातु जिनयोः॥ २॥

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058